ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

जीविका से आत्मनिर्भरता की ओर : मुन्नी दीदी की सफलता की कहानी
(पृष्ठ – 02)

मेहनत और आत्मविश्वास से मिली सुलोचना को नई राह
(पृष्ठ – 03)

संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक की प्रेरणादायक यात्रा
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – नवम्बर 2025 ।। अंक – 52

सतत् जीविकोपार्जन योजनाः आत्मनिर्भर वर्तमान से स्वर्णिम भविष्य का सफर

बिहार जैसे कृषि प्रधान राज्य में गरीबी उन्मूलन और ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करना हमेशा से एक बड़ी चुनौती रहा है। विशेषकर अत्यंत गरीब एवं वंचित परिवार, जिनकी आय सीमित रही है, वे सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित रहे। इन्हीं चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए बिहार सरकार द्वारा 'सतत् जीविकोपार्जन योजना' की शुरुआत की गई। योजना का मुख्य उद्देश्य अत्यंत गरीब परिवारों को आत्मनिर्भर बनाना, उन्हें स्थायी आय के स्रोत से जोड़ना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त आधार प्रदान करना है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना का सबसे बड़ा लक्ष्य केवल आर्थिक सहायता देना नहीं है, बल्कि परिवारों को सामाजिक रूप से सशक्त बनाना भी है। इस योजना के माध्यम से चयनित परिवारों को प्रशिक्षण एवं आर्थिक सहायता दी जाती है। सबसे पहले, अत्यंत गरीब परिवारों की पहचान जीविका संपोषित ग्राम संगठन के माध्यम से की जाती है। उसके बाद, उन्हें आजीविका विकल्पों जैसे पशुपालन, बकरी पालन, मुर्गीपालन, सब्ज़ी उत्पादन, दुकानदारी, हस्तशिल्प या सेवा आधारित उद्यम से जोड़ा जाता है।

इस योजना की विशेषता यह है कि इसमें लाभार्थियों को न केवल जीविकोपार्जन निवेश निधि और विशेष निवेश निधि जैसी वित्तीय सहायता दी जाती है, बल्कि उन्हें जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि के माध्यम से शुरुआती आर्थिक जरूरतों को भी पूरा करनेका अवसर मिलता है। इस बहु स्तरीय सहयोग से लाभार्थी परिवार धीरे–धीरे आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं।

बिहार सरकार का लक्ष्य है कि आगामी वर्षों में सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़े अत्यंत गरीब परिवारों को एक से अधिक आजीविका विकल्पों से जोड़ा जाए। यह केवल एक आर्थिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और समावेशन की दृष्टि से भी एक सशक्त कदम है। ग्रामीण परिवारों को छोटे–छोटे उद्यमों के माध्यम से जोड़कर राज्य एक ऐसी आर्थिक संरचना तैयार कर रहा है, जहाँ रोजगार सृजन गाँवों में ही हो और पलायन की प्रवृत्ति कम हो।

भविष्य में योजना को और प्रभावी बनाने के लिए डिजिटल मॉनिटरिंग, नियमित प्रशिक्षण और बाज़ार से जोड़ने की पहल की जा रही है। मास्टर संसाधन सेवी को प्रशिक्षित कर स्थानीय स्तर पर आजीविका परामर्श उपलब्ध कराया जा रहा है। इससे योजना की स्थायित्व और पारदर्शिता दोनों बढ़ रही हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना में महिलाएँ न केवल लाभार्थी हैं, बल्कि इस योजना की संचालक भी हैं। वे स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन और संकुल स्तरीय संघ के माध्यम से योजना के क्रियान्वयन में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। इससे न केवल महिलाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि समाज में उनकी पहचान और निर्णय क्षमता भी बढ़ी है।

इन लाभार्थियों को उत्पादों के उत्पादन, ब्रांडिंग और विपणन से जोड़कर बिहार सरकार द्वारा "आत्मनिर्भर ग्रामीण महिला उद्यमिता मॉडल" को बढ़ावा दिया जा रहा है। राज्य स्तरीय ब्रांड के माध्यम से इन उत्पादों को राष्ट्रीय बाजार तक पहुँचाने का लक्ष्य है। इससे योजना के लाभार्थी परिवार दीर्घकालिक आय प्राप्त कर सकेंगे और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में उनकी भागीदारी और मजबूत होगी।

सतत् जीविकोपार्जन योजना, बिहार के विकास की एक नई इबारत लिख रही है। यह केवल आर्थिक सहायता की योजना नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता की ओर एक जनांदोलन है। आने वाले वर्षों में जैसे–जैसे इस योजना का दायरा बढ़ेगा, वैसे–वैसे बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था अधिक मज़बूत, स्वावलंबी और समावेशी बनेगी।

आने वाले समय में इस योजना के माध्यम से सरकार का लक्ष्य है कि प्रत्येक अत्यंत गरीब परिवार अपने गाँव में ही सम्मानजनक आजीविका पा सके और किसी भी प्रकार की आर्थिक असुरक्षा से मुक्त हो। इस दिशा में राज्य सरकार का प्रयास है कि सतत् जीविकोपार्जन योजना को कृषि, उद्यमिता और ग्रामीण उद्योगों से जोड़कर एक विकास मॉडल के रूप में विकसित किया जाए। जब प्रत्येक परिवार के पास स्थायी आय का स्रोत होगा, तब न केवल गरीबी कम होगी, बल्कि गाँवों में आर्थिक गतिशीलता, सामाजिक समरसता और आत्मनिर्भरता का एक नया युग शुरू होगा।

दिव्यांगता नहीं बनी मजबूरी, रजनी दीदी बनी स्वावलंबन की मिसाल

काठामाठा पंचायत, प्रखंड कोचाधामन, जिला किशनगंज की रहने वाली रजनी देवी, पति अशोक शाह, जीवन के कठिन हालातों में भी हिम्मत नहीं हारीं। दोनों पैरों से दिव्यांग होने के बावजूद, उन्होंने संघर्ष को अपनी ताकत बनाया और आज आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन चुकी हैं।

वर्ष 2020 में गंगा जीविका स्वयं सहायता समूह की बैठक के दौरान रजनी देवी को सतत् जीविकोपार्जन योजना के बारे में जानकारी मिली। इसके पश्चात निर्मल जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा रजनी देवी का चयन योजना की लाभार्थी के रूप में किया गया। योजना के अंतर्गत उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10000 रूपये की राशि प्राप्त हुई, जिससे उन्होंने एक छोटी दुकान बनवाई। आगे चलकर जीविकोपार्जन निवेश निधि के अंतर्गत 20000 रूपये की सहायता राशि से ग्राम संगठन द्वारा किराना का सामान उपलब्ध कराया गया।

धीरे–धीरे दुकान चल पड़ी और ग्राहकों की संख्या बढ़ने लगी। दीदी बताती हैं कि प्रतिदिन 1600 से 2000 रूपये तक की बिक्री हो जाती है। द्वितीय किश्त के रूप में प्राप्त 15000 रूपये की राशि से उन्होंने फ्रिज तथा ठंडे पेय पदार्थों की व्यवस्था की, जिससे बिक्री में और वृद्धि हुई। अब उनकी मासिक आमदनी 10000 रूपये से अधिक हो गई है, और वार्षिक आय 1.5 लाख रूपये से अधिक है।

रजनी देवी कहती हैं, "सतत् जीविकोपार्जन योजना मेरे परिवार के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। इसने मुझे आत्मनिर्भर बनाया और मेरे जीवन को नई दिशा दी।" आज वे अपने बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रही हैं और समाज में अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं। रजनी दीदी ने यह सिद्ध कर दिया कि दृढ़ इच्छाशक्ति और सही अवसर मिल जाए, तो कोई भी व्यक्ति अपनी सीमाओं से ऊपर उठकर सफलता की नई कहानी लिख सकता है।

जीविका से आत्मनिर्भरता की ओर : मुन्नी दीदी की सफलता की कहानी

मझौली पंचायत, प्रखंड बोचहाँ, जिला मुजफ्फरपुर की रहने वाली मुन्नी देवी, पति शिवा पासवान, एक गरीब परिवार से हैं। लगभग सात वर्ष पहले तक मुन्नी देवी का जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ था। उनके पति दैनिक मजदूरी का कार्य करते थे, लेकिन काम हमेशा नहीं मिलता था, जिससे घर में कभी चूल्हा जलता, तो कभी परिवार को रुखा–सूखा खाना खाकर दिन बिताना पड़ता था। चार बच्चों के इस परिवार के पास फूस का घर था,जिसमें वर्षा के समय पानी टपकने लगता था, और बच्चे भी शिक्षा से वंचित थे।

इसी बीच जीविका की सामुदायिक संसाधन सेवियों की दल और समुदाय कर्मियों ने मुन्नी देवी की स्थिति को देखा और उन्हें फूलमाला जीविका महिला विकास स्वावलंबी सहकारी समिति लिमिटेड अंतर्गत चांदनी जीविका महिला ग्राम संगठन तथा कृष्णा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनाया गया। समूह से जुड़ने के बाद मुन्नी देवी को बचत और आजीविका संवर्धन प्रबंधन पर प्रशिक्षण मिला।

मुन्नी देवी ने समूह से प्रथम बार 5000 रूपये का ऋण लेकर बकरी पालन शुरू किया। लेकिन उसी दौरान आई बाढ़ में उनका घर बह गया। तब उन्होंने समूह से 10000 रूपये लेकर घर की मरम्मत कराई और पुनः खड़ी हुई। इसके बाद वर्ष 2021 में सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत उनका चयन हुआ। योजना के तहत उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10000 रूपये, जीविकोपार्जन निवेश निधि के रूप में 20000 रूपये और जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में 7000 रूपये, कुल 37000 रूपये का लाभ मिला।

उन्होंने प्राप्त राशि से अपने घर की मरम्मत की और दुकान हेतु एक गुमटी बनवाई। जीविकोपार्जन निवेश निधि की राशि से उन्होंने खाने–पीने का सामान, दैनिक उपयोग की वस्तुएँ, श्रृंगार सामग्री और बच्चों के खिलौने आदि रखकर जनरल स्टोर की शुरुआत की। आज उनकी दुकान से औसतन 3000 से 3500 रूपये की दैनिक बिक्री होती है, जिससे उन्हें प्रतिदिन 300 से 400 रूपये की आमदनी और मासिक लगभग 9000 रूपये की आय होती है।

आज मुन्नी देवी न केवल अपने परिवार की जिम्मेदारी संभाल रही हैं, बल्कि समूह के ऋण का नियमित भुगतान भी कर रही हैं। अपने बच्चों की पढ़ाई के साथ–साथ वे आत्मनिर्भरता की राह पर आगे बढ़ रही हैं। जीविका ने उनके जीवन में उजाला भर दिया है।

मेहनत और आत्मविश्वास से मिली सुलोचना को नई राह

नवादा जिला के कौवाकोल प्रखंड के दरवा पंचायत की सुलोचना देवी, पति किशोरी मिस्त्री कृष्णा जीविका स्वयं सहायता समूह, खुशबू जीविका महिला ग्राम संगठन तथा स्वागतम जीविका महिला विकास स्वावलंबी सहकारी समिति लिमिटेड, नवादा की सक्रिय सदस्य हैं।

समूह से जुड़ने से पहले सुलोचना दीदी का जीवन काफी संघर्षपूर्ण था। उनके पति बीमार रहने के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। घर का खर्च चलाने के लिए वे कभी बटाई पर खेती करतीं, तो कभी मजदूरी करके अपने बच्चों का पालन–पोषण करती थीं। आय के सीमित साधनों के कारण बच्चों की शिक्षा और घर के खर्च में कठिनाइयाँ बनी रहती थीं।

सुलोचना देवी की दयनीय स्थिति को देखते हुए वर्ष 2022 में खुशबू जीविका महिला ग्राम संगठन के द्वारा उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत किया गया। योजना के तहत मिलने वाला सहायता राशि से सुलोचना देवी कपड़ा दुकान चलाने की इच्छा जताई।

इस योजना के तहत सुलोचना दीदी को विशेष निवेश निधि के रूप में 10000 रूपये की सहायता राशि प्राप्त हुई। इस राशि से उन्होंने एक छोटी सी दुकान बनवाई। आगे चलकर जीविकोपार्जन निवेश निधि के अंतर्गत 20000 रूपये की सहायता राशि से ग्राम संगठन द्वारा बिक्री हेतु कपड़े उपलब्ध कराया गया। मेहनत और लगन से उन्होंने धीरे–धीरे कपड़ा दुकान को आगे बढ़ाया। उनके बच्चे भी दुकान चलाने में मदद करने लगे। दुकान की बचत से हुए आय से उन्होंने एक मनिहारी सामग्री की दुकान भी खोल लिया।

अब सुलोचना दीदी की दुकानों से प्रतिदिन लगभग 600 रूपये की आमदनी होती है। इस आय से वे अपने परिवार का भरण–पोषण अच्छे से कर रही हैं और अपने बच्चों को शिक्षा भी दिला रही हैं। सुलोचना दीदी ने यह साबित किया है कि यदि दृढ़ इच्छाशक्ति और निरंतर प्रयास हो, तो कठिन परिस्थितियाँ भी सफलता के कदम बन जाती हैं। आज सुलोचना दीदी आत्मनिर्भरता और महिला सशक्तिकरण की प्रेरक मिसाल हैं।

सोनमती ने संकल्प से सफलता का तय किया सफ़र

महुआरी गांव, महुआरी पंचायत, भभुआ प्रखंड, कैमूर जिला की रहने वाली सोनमती कुंवर एक साहसी और संघर्षशील महिला हैं। इनके पति स्वर्गीय रमाशंकर राम का देहांत बहुत पहले हो गया था, जिसके बाद इनका जीवन संघर्षों से भर गया। एक बेटे और एक बेटी के साथ सोनमती दीदी ने अकेले ही जीवन की कठिनाइयों का सामना किया। खेतों में रोपनी, सोहनी और कटनी के समय मजदूरी कर वे किसी तरह अपने बच्चों का पेट पालती थीं। कभी–कभी दूसरे के घर जाकर चूल्हा–चौकी का काम भी करती थीं। आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि बच्चों की सेहत और पढ़ाई पर ध्यान देना भी मुश्किल हो गया था।

सोनमती दीदी की दयनीय स्थिति देखकर गांव की अन्य जीविका दीदियों ने ग्राम संगठन को उनके बारे में बताया। जांच–पड़ताल के बाद उन्हें प्रीतम जीविका स्वयं सहायता समूह, वर्तमान जीविका महिला ग्राम संगठन और अनुपम जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ से जोड़ा गया। उन्होंने 8 अगस्त 2019 को जीविका से जुड़कर नई उम्मीद की शुरुआत की। उनके दयनीय स्थिति को देखते हुए उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत चयन किया गया, जहां से उन्हें किराना दुकान खोलने के लिए सहयोग मिला।

धीरे–धीरे सोनमती दीदी ने अपने दुकान को अच्छे ढंग से चलाना शुरू किया। अब वे न केवल अपने परिवार का भरण–पोषण कर पा रही हैं बल्कि कुछ पैसे बचाकर 10 कट्ठा जमीन बटैया पर लेकर खेती भी कर रही हैं। उनके दोनों बच्चें अब स्कूल में पढ़ाई कर रहे हैं। जीविका से जुड़ने के बाद उनके जीवन में आत्मविश्वास और स्थायित्व दोनों आए हैं।

सोनमती दीदी का आगे का सपना है कि वे अपने किराना दुकान के साथ–साथ सब्जी और श्रृंगार की दुकान भी शुरू करें, ताकि आमदनी और बढ़े और परिवार को गरीबी से पूरी तरह मुक्त कर सकें। वह गर्व से कहती हैं की "जीविका के आने से हर घर में खुशहाली है।"

संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक की प्रेरणादायक यात्रा

पुनम देवी, मुंगेर जिले के जमालपुर प्रखंड में रहने वाली है। पुनम देवी, सुप्रिया जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य है। सूरज जीविका महिला ग्राम संगठन के माध्यम से सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ीं। उनका परिवार बेहद साधारण था। पति मनोज पोद्दार दैनिक मजदूरी करते थे, और मजदूरी का काम रोज न मिलने के कारण परिवार को लगातार आर्थिक असुरक्षा का सामना करना पड़ता था। कभी–कभी तो ऐसी स्थिति बन जाती थी कि दो वक्त का भोजन जुटाना भी कठिन हो जाता था। बच्चों की पढ़ाई, कपड़े, दवाइयाँ और अन्य ज़रूरी खर्च पूरे न हो पाने के कारण घर का प्रत्येक दिन तनाव, संघर्ष और चिंता में बीतता था।

इसी बीच प्रखंड में सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत हुई, जिसका उद्देश्य गरीब और वंचित परिवारों को एक स्थायी आजीविका देकर आत्मनिर्भर बनाना था। योजना के चयन प्रक्रिया में पुनम देवी को लाभार्थी के रूप में चिन्हित किया गया। चयन के बाद उन्हें तीन दिवसीय क्षमता निर्माण प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें उन्हें छोटे व्यवसाय की शुरुआत करने, पूँजी के उपयोग, वस्तुओं के प्रबंधन, ग्राहक सेवा, हिसाब–किताब रखने और बाजार की जरूरतों को समझने जैसे महत्वपूर्ण कौशल सिखाए गए। प्रशिक्षण के दौरान पुनम देवी ने महसूस किया कि गांव में एक छोटे किराना दुकान की आवश्यकता लगातार बनी रहती है। लोग रोजमर्रा की चीजों के लिए दूर जाते हैं, और गांव के बीच ही एक विश्वसनीय दुकान हो तो लोगों को सुविधा होगी और उन्हें स्वयं भी कमाई का एक नियमित साधन मिल सकेगा। इन्हीं विचारों के साथ उन्होंने अपना व्यवसाय किराना दुकान के रूप में शुरू करने का निर्णय लिया।

प्रशिक्षण पूरा होने के तुरंत बाद उन्होंने अपनी दुकान खोली। शुरुआत में दुकान छोटी थी और पूँजी भी सीमित थी, पर उन्होंने उपलब्ध धन का सोच–समझकर उपयोग किया और बच्चों के खेलने के सामान, बिस्कुट, नमकीन, साबुन, तेल, मसाले, चाय, नमक, टूथपेस्ट जैसी रोजमर्रा की आवश्यक वस्तुएँ रखीं। धीरे–धीरे उनके मेहनती स्वभाव, साफ–सुथरी दुकान, उचित दाम और ग्राहकों के प्रति विनम्र व्यवहार ने उन्हें लोगों की पसंद बना दिया। गांव के लोग उनके व्यवस्थित तरीके से सामान रखने और समय पर उपलब्धता से प्रभावित हुए, जिसके चलते उनकी दुकान का नाम गांव में फैलने लगा। समय के साथ ग्राहकों की संख्या बढ़ती गई और बिक्री भी लगातार बेहतर होने लगी। कुछ ही महीनों में उनकी दुकान गांव की एक विश्वसनीय और नियमित जरूरतों को पूरा करने वाली दुकान के रूप में स्थापित हो गई।

आज की स्थिति पहले से बिल्कुल भिन्न है। पुनम देवी की दुकान अब अच्छी तरह चल रही है और इससे उन्हें नियमित आमदनी प्राप्त होती है। इस आय से वह अपने परिवार का सम्मानपूर्वक भरण–पोषण कर रही हैं। बच्चों की पढ़ाई बिना किसी रुकावट के जारी है, घर की आवश्यक जरूरतें समय पर पूरी हो रही हैं और परिवार में पहले की तुलना में अधिक खुशहाली और स्थिरता आई है। जो परिवार कभी दैनिक मजदूरी पर पूरी तरह निर्भर था और अनिश्चितता में जीता था, वही परिवार आज आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और सुरक्षित जीवन जी रहा है। पुनम देवी न केवल अपने परिवार की स्थिति बदल चुकी हैं, बल्कि अब वे अपने गांव की अन्य महिलाओं के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण बन गई हैं। वे आसपास की दीदियों को भी प्रोत्साहित करती हैं कि वे सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर अपने कौशल और रुचि के आधार पर कोई न कोई आय का साधन शुरू करें। उनकी यात्रा इस बात का सशक्त प्रमाण है कि सही मार्गदर्शन, अवसर और दृढ़ इच्छाशक्ति मिल जाए तो बदलाव अवश्य आता है और जीवन की दिशा पूरी तरह बदल जाती है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार